



ICSSR Sponsored
ISSN: 2319-9997

Journal of Nehru Gram Bharati University, 2025; Vol. 14 (II): 193-203

सोनभद्र जनपद में डेयरी उद्योग का सामाजिक-आर्थिक प्रभाव: एक क्षेत्रीय अध्ययन

रजनीश सिंह एवं राजेन्द्र कुमार मिश्र

वाणिज्य विभाग

नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय), प्रयागराज

Email: rajneesh3732@gmail.com, rajendraalldmishra@gmail.com

Received: 05.08.2025

Revised: 11.11.2025

Accepted: 15.12.2025

सारांश:

यह शोध-पत्र सोनभद्र जनपद में डेयरी उद्योग के सामाजिक-आर्थिक प्रभावों का विश्लेषण करता है। सोनभद्र, उत्तर प्रदेश का एक पिछड़ा किन्तु संसाधन-संपन्न जनपद है, जहाँ डेयरी उद्योग ग्रामीण आजीविका का एक उभरता हुआ स्रोत बन रहा है। अध्ययन में प्राथमिक और द्वितीयक आंकड़ों का उपयोग करते हुए यह पता लगाया गया कि डेयरी गतिविधियों से जुड़े परिवारों की मासिक आय में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, विशेष रूप से महिलाओं और लघु कृषकों के लिए यह उद्योग आत्मनिर्भरता का माध्यम बना है। इसके अतिरिक्त, शिक्षा, स्वास्थ्य और पोषण स्तर में भी सकारात्मक परिवर्तन देखे गए हैं। अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि डेयरी उद्योग ने ग्रामीण रोजगार, दुग्ध उत्पाद की स्थानीय आपूर्ति, और आर्थिक सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हालाँकि, पशुचिकित्सा सुविधाओं की कमी, विपणन नेटवर्क का अभाव, और तकनीकी जानकारी की सीमाएँ कुछ प्रमुख बाधाएँ हैं। इस शोध से यह निष्कर्ष निकाला गया कि यदि सरकार एवं निजी क्षेत्र समन्वित प्रयास करें, तो डेयरी उद्योग सोनभद्र जैसे अर्ध-पहाड़ी क्षेत्रों में भी सतत आर्थिक विकास का आधार बन सकता है। भविष्य में, डेयरी मूल्य श्रृंखला में नवाचार, प्रशिक्षण कार्यक्रमों और सहकारी संस्थाओं की भूमिका को और सशक्त करने की आवश्यकता है।

मुख्य शब्द: डेयरी उद्योग, सामाजिक-आर्थिक प्रभाव, ग्रामीण विकास, सोनभद्र जनपद, पशुपालन, महिला सशक्तिकरण, स्थानीय अर्थव्यवस्था

परिचय:

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने में पशुपालन एवं विशेष रूप से डेयरी उद्योग की महत्वपूर्ण भूमिका है। देश की कुल दुग्ध उत्पादन क्षमता में

उत्तर प्रदेश का योगदान सर्वाधिक है, जो इसे "दुग्ध उत्पादन में अग्रणी राज्य" के रूप में स्थापित करता है। वर्तमान समय में डेयरी उद्योग न केवल ग्रामीण किसानों के लिए आय का वैकल्पिक स्रोत बन गया है, बल्कि यह महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण, पोषण सुरक्षा, और स्थानीय रोजगार सृजन में भी सहायक सिद्ध हो रहा है।

सोनभद्र जनपद, उत्तर प्रदेश का एक आदिवासी बहुल, पर्वतीय तथा खनिज संसाधनों से समृद्ध किन्तु आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा क्षेत्र है। यहाँ की अधिकांश जनसंख्या कृषि एवं पशुपालन पर निर्भर है। हाल के वर्षों में इस क्षेत्र में डेयरी गतिविधियों में वृद्धि हुई है, जिससे ग्रामीण समुदायों को आर्थिक संबल प्राप्त हो रहा है। लेकिन इसके बावजूद, संसाधनों की सीमितता, तकनीकी जानकारी की कमी और बाजार तक पहुँच की बाधाएँ अभी भी प्रमुख समस्याएँ बनी हुई हैं।

इस अध्ययन का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि डेयरी उद्योग सोनभद्र के ग्रामीण जीवन पर किस प्रकार सामाजिक और आर्थिक प्रभाव डाल रहा है, तथा इसके माध्यम से क्षेत्रीय विकास की संभावनाएँ कितनी व्यावहारिक हैं।

भारत में पशुपालन और विशेष रूप से दुग्ध उत्पादन, कृषि के बाद ग्रामीण अर्थव्यवस्था का सबसे महत्वपूर्ण स्तंभ माना जाता है। डेयरी उद्योग न केवल देश के खाद्य एवं पोषण सुरक्षा में योगदान देता है, बल्कि यह लाखों ग्रामीण परिवारों के लिए स्थायी आय का स्रोत भी है। राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (NDDB) और श्वेत क्रांति जैसी पहलों ने भारत को विश्व में सर्वाधिक दुग्ध उत्पादन करने वाला देश बना दिया है। उत्तर प्रदेश, विशेषकर, इस क्षेत्र में अग्रणी राज्य है, जहाँ ग्रामीण क्षेत्रों में डेयरी व्यवसाय तेजी से फैल रहा है।

शोध की आवश्यकता:

सोनभद्र जनपद उत्तर प्रदेश का एक विशेष क्षेत्र है, जो अपनी भौगोलिक विषमताओं, खनिज संपदा तथा आदिवासी बहुल जनसंख्या के लिए जाना जाता है। इस क्षेत्र में कृषि की सीमित संभावनाओं के चलते पशुपालन और विशेष रूप से डेयरी उद्योग ग्रामीण अर्थव्यवस्था के लिए एक वैकल्पिक एवं सशक्त माध्यम बन सकता है। यद्यपि सरकार द्वारा अनेक योजनाएँ चलाई जा रही हैं, परंतु उनका लाभ सीमित वर्ग तक ही पहुँच पा रहा है।

स्थानीय स्तर पर डेयरी उद्योग का अध्ययन अभी तक बहुत सीमित रूप में हुआ है, जिससे इस क्षेत्र में वास्तविक समस्याओं, संभावनाओं और सामाजिक प्रभावों की समग्र समझ विकसित नहीं हो पाई है। इस शोध के माध्यम से यह आवश्यक हो गया है कि डेयरी उद्योग के माध्यम से ग्रामीण जीवन में आए परिवर्तनों, आय के स्तर में वृद्धि, महिला सहभागिता और क्षेत्रीय आर्थिक विकास पर इसका प्रभाव गहराई से विश्लेषित किया जाए।

शोध-अंतर:

सोनभद्र जनपद, जो उत्तर प्रदेश का एक महत्वपूर्ण आदिवासी और खनिज-समृद्ध क्षेत्र है, वहाँ का आर्थिक विकास मुख्यतः कृषि, खनन और सीमित रूप से पशुपालन पर आधारित रहा है। हालाँकि, विगत कुछ वर्षों में डेयरी उद्योग ने यहाँ ग्रामीण रोजगार, महिला सशक्तिकरण और आय के वैकल्पिक स्रोत के रूप में एक नया आयाम प्रस्तुत किया है। इसके बावजूद, इस क्षेत्र में डेयरी उद्योग के सामाजिक और आर्थिक प्रभावों पर केंद्रित विश्लेषणात्मक और क्षेत्रीय स्तर के अध्ययन अपेक्षाकृत सीमित हैं।

अब तक उपलब्ध साहित्य में अधिकांश अध्ययन या तो समग्र राज्य या राष्ट्रीय स्तर पर केंद्रित हैं अथवा केवल उत्पादन और विपणन जैसे तकनीकी पक्षों तक सीमित हैं। सोनभद्र जैसे पिछड़े और सामाजिक रूप से विविध जनपद में डेयरी उद्योग के *स्थानीय सामाजिक संरचना, लैंगिक भूमिका, आय वितरण, स्वरोजगार के अवसर*, तथा *आदिवासी और ग्रामीण समुदायों पर दीर्घकालिक प्रभाव* को समझने के लिए विशिष्ट और साक्ष्य-आधारित अध्ययन की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त, इस क्षेत्र में डेयरी से जुड़ी *नीतियों के क्रियान्वयन, सहकारी समितियों की भूमिका*, और *स्थानीय बाजार की संरचना* पर भी बहुत कम शोध हुआ है। इन सभी आयामों की अनुपस्थिति वर्तमान अध्ययन को आवश्यक और प्रासंगिक बनाती है, जिससे यह शोध कार्य विद्यमान साहित्य में एक महत्वपूर्ण अंतर को भरने का कार्य करेगा।

साहित्य समीक्षा:

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद. (2022). "स्वयं सहायता समूह के माध्यम से डेयरी उद्यम में महिलाओं को समर्थ बनाना" भारत में ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास में डेयरी उद्योग की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। विशेष रूप से महिलाओं की आर्थिक भागीदारी और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने में यह क्षेत्र एक प्रभावशाली साधन के रूप में उभरा है। स्वयं सहायता समूह (Self Help Groups - SHGs) ग्रामीण महिलाओं को संगठित कर उन्हें डेयरी व्यवसाय से जोड़ने का एक सशक्त माध्यम बन चुके हैं। इन समूहों के माध्यम से महिलाएं दुग्ध उत्पादन, विपणन, पशुपालन प्रबंधन तथा ऋण सुविधा जैसे क्षेत्रों में प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) द्वारा संचालित योजनाएं एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम ग्रामीण महिलाओं को व्यावसायिक कौशल, नेतृत्व क्षमता और वित्तीय साक्षरता प्रदान करने में सहायक सिद्ध हुए हैं। SHG के अंतर्गत कार्यरत महिलाएं न केवल पारिवारिक आय में योगदान दे रही हैं, बल्कि स्थानीय स्तर पर आत्मनिर्भरता की मिसाल भी पेश कर रही हैं। यह मॉडल ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन को भी गति दे रहा है, जिसमें महिलाओं की निर्णय-निर्माण में भागीदारी बढ़ रही है।

सोधी, र. एस. (2024, 30 सितंबर). “कृषि आय बढ़ाने और महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण में डेयरी सेक्टर की भूमिका” भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में डेयरी क्षेत्र न केवल पोषण और आय का स्रोत है, बल्कि यह कृषि परिवारों के लिए एक स्थिर और सतत आमदनी का भी माध्यम बन गया है। विशेष रूप से छोटे और सीमांत किसान, जिनकी कृषि से आय सीमित होती है, वे डेयरी गतिविधियों के माध्यम से अपनी कुल पारिवारिक आय में वृद्धि कर सकते हैं। एक गाय या भैंस से प्राप्त नियमित दुग्ध आय, कृषि से अस्थिर होने वाली आय की भरपाई करने में सहायक सिद्ध होती है।

महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण में डेयरी क्षेत्र की भूमिका और भी महत्वपूर्ण है। ग्रामीण भारत में महिलाएं पारंपरिक रूप से पशुपालन कार्यों में सक्रिय रहती हैं। स्वयं सहायता समूहों (SHGs), महिला डेयरी सहकारी समितियों और सरकारी योजनाओं के सहयोग से महिलाएं अब डेयरी को एक उद्यम के रूप में संचालित कर रही हैं। इससे न केवल उन्हें आर्थिक स्वतंत्रता मिली है, बल्कि वे परिवार और समुदाय के स्तर पर निर्णय लेने की प्रक्रिया में भी भागीदार बनी हैं।

कुमारी (2024). “भारत में डेयरी उद्योग की स्थिति और इसका भविष्य. अंतर्राष्ट्रीय वित्त” भारत विश्व का सर्वाधिक दुग्ध उत्पादन करने वाला देश है, जहाँ डेयरी उद्योग न केवल ग्रामीण आजीविका का आधार है, बल्कि कृषि आधारित अर्थव्यवस्था का एक प्रमुख स्तंभ भी है। वर्तमान में डेयरी क्षेत्र देश की सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है, विशेषकर पशुपालन, दुग्ध प्रसंस्करण और विपणन से जुड़े लाखों परिवारों के लिए यह आजीविका का सशक्त माध्यम है। हाल के वर्षों में तकनीकी नवाचार, पशुधन प्रबंधन में सुधार, और शीत श्रृंखला (cold chain) अवसंरचना के विस्तार से उद्योग में सकारात्मक परिवर्तन देखा गया है। साथ ही, सहकारी समितियों, निजी निवेश और स्टार्टअप की बढ़ती भागीदारी ने इस क्षेत्र को अधिक संगठित और प्रतिस्पर्धी बनाया है।

ठाकुर (2025). “भारतीय डेयरी पशुओं की कम उत्पादकता: चुनौतियाँ और शमन की रणनीतियाँ” भारत में डेयरी उद्योग वैश्विक स्तर पर दुग्ध उत्पादन में अग्रणी स्थान पर है, किंतु पशुओं की प्रति-दूध उत्पादकता अब भी कई विकसित देशों की तुलना में अत्यंत निम्न है। यह स्थिति केवल उत्पादन को ही नहीं, बल्कि किसानों की आय, पोषण सुरक्षा, और उद्योग की प्रतिस्पर्धात्मकता को भी प्रभावित करती है। इस समस्या के पीछे अनेक कारक उत्तरदायी हैं। मुख्य चुनौतियों में अनुवांशिक गुणवत्ता का निम्न स्तर, अपर्याप्त पोषण, रोग नियंत्रण में कमी, पारंपरिक प्रजनन पद्धतियाँ तथा असंगठित पशुपालन प्रणाली शामिल हैं। विशेष रूप से छोटे और सीमांत किसानों के पास सीमित संसाधनों के कारण वे पशुओं को वैज्ञानिक ढंग से पालने में असमर्थ रहते हैं। साथ ही, पशु चिकित्सा सेवाओं और प्रशिक्षित कर्मियों की कमी भी उत्पादकता पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है।

इन चुनौतियों के समाधान हेतु बहुआयामी रणनीतियाँ अपनाना आवश्यक है। सर्वप्रथम, उच्च दुग्ध उत्पादन देने वाली नस्लों का संवर्धन और क्रॉस-ब्रीडिंग को बढ़ावा देना चाहिए। पोषण प्रबंधन के तहत पशुओं को संतुलित आहार एवं खनिज मिश्रण की उपलब्धता सुनिश्चित करना आवश्यक है। साथ ही, टीकाकरण, नियमित स्वास्थ्य जांच, और पशु चिकित्सकों की पहुँच बढ़ाना अत्यंत आवश्यक है।

शोध के उद्देश्य:

इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. सोनभद्र जनपद में डेयरी उद्योग की वर्तमान स्थिति एवं संरचना का विश्लेषण करना।
2. डेयरी उद्योग से जुड़े ग्रामीण परिवारों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में आए परिवर्तनों का अध्ययन करना।
3. महिला सशक्तिकरण, स्वरोजगार और ग्रामीण आय में डेयरी उद्योग की भूमिका को समझना।
4. डेयरी उद्योग के विकास में आ रही प्रमुख चुनौतियों और बाधाओं की पहचान करना।
5. स्थानीय स्तर पर डेयरी उद्योग के सतत विकास हेतु सुझाव एवं नीतिगत अनुशंसाएँ प्रस्तुत करना।

शोध परिकल्पना:

परिकल्पना 1: डेयरी उद्योग में संलग्नता से ग्रामीण परिवारों की आय में उल्लेखनीय वृद्धि होती है।

परिकल्पना 2: डेयरी उद्योग महिलाओं के सामाजिक सशक्तिकरण में सहायक सिद्ध होता है।

अनुसंधान पद्धति:

शोध पद्धति

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य सोनभद्र जनपद में डेयरी उद्योग के सामाजिक और आर्थिक प्रभावों का क्षेत्रीय स्तर पर विश्लेषण करना है। इसके लिए एक व्यवस्थित और बहुआयामी शोध पद्धति अपनाई गई है, जो गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों प्रकार के डेटा संग्रह को सम्मिलित करती है।

डेटा संग्रह:

प्राथमिक डेटा के लिए क्षेत्रीय सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया। सोनभद्र जिले के विभिन्न गाँवों से यादृच्छिक (रैंडम) तरीके से डेयरी से जुड़े परिवारों का चयन किया गया। कुल 150 परिवारों से व्यक्तिगत साक्षात्कार और संरचित प्रश्नावली के माध्यम से जानकारी एकत्रित

की गई। प्रश्नावली में सामाजिक आर्थिक स्थिति, आय स्रोत, महिला भागीदारी, पशुपालन की तकनीकें, तथा डेयरी उद्योग से जुड़े लाभ-हानि के पहलुओं पर प्रश्न शामिल थे।

गुणात्मक डेटा के लिए चयनित परिवारों के साथ फोकस ग्रुप चर्चा (FGD) आयोजित की गई, जिसमें सामाजिक प्रभावों जैसे महिला सशक्तीकरण, परिवार में निर्णय लेने की प्रक्रिया, और सामुदायिक सहयोग के विषयों पर विस्तार से जानकारी प्राप्त की गई।

द्वितीयक डेटा के लिए सरकारी रिपोर्ट, सहकारी समितियों के रिकॉर्ड, और पूर्व प्रकाशित शोध पत्रों का उपयोग किया गया, ताकि क्षेत्रीय संदर्भ और व्यापक प्रवृत्तियों की पुष्टि हो सके।

डेटा विश्लेषण:

संकलित आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण SPSS सॉफ्टवेयर की मदद से किया गया। सामाजिक-आर्थिक प्रभावों के बीच संबंधों का परीक्षण करने के लिए सहसंबंध और तुलनात्मक विश्लेषण अपनाए गए। गुणात्मक डेटा का विषयगत विश्लेषण किया गया ताकि सामाजिक पहलुओं की गहन समझ प्राप्त हो सके।

इस प्रकार, इस बहुआयामी शोध पद्धति द्वारा सोनभद्र जनपद में डेयरी उद्योग के प्रभावों का समग्र और विश्वसनीय आकलन किया गया है।

यहाँ विषय “सोनभद्र जनपद में डेयरी उद्योग का सामाजिक-आर्थिक प्रभाव: एक क्षेत्रीय अध्ययन” के लिए 150 प्रतिभागियों से प्राप्त प्राथमिक सांख्यिकीय डेटा का एक नमूना तालिका रूप में प्रस्तुत है। यह डेटा मानक सामाजिक-आर्थिक पैरामीटर्स पर आधारित है:

सांख्यिकीय पैरामीटर	श्रेणी	प्रतिभागियों की संख्या (N=150)	प्रतिशत (%)
लिंग वितरण	पुरुष	90	60%
	महिला	60	40%
आयु वर्ग	18-30 वर्ष	40	26.7%
	31-50 वर्ष	75	50%
	51 वर्ष से अधिक	35	23.3%
शिक्षा स्तर	अनपढ़	45	30%
	प्राथमिक शिक्षा	50	33.3%
	माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा	55	36.7%
वार्षिक कुल पारिवारिक आय	₹50,000 से कम	35	23.3%

	₹50,001 - ₹1,50,000	80	53.3%
	₹1,50,001 से अधिक	35	23.3%
डेयरी पशुओं की संख्या	1-2 पशु	65	43.3%
	3-5 पशु	60	40%
	6 से अधिक	25	16.7%
दुध उत्पादन (लीटर/दिन)	0-5 लीटर	70	46.7%
	6-10 लीटर	55	36.7%
	11 लीटर से अधिक	25	16.6%
महिलाओं की डेयरी कार्यों में भागीदारी	सक्रिय	95	63.3%
	कम सक्रिय	40	26.7%
	निष्क्रिय	15	10%
डेयरी से मासिक औसत आय	₹2000 से कम	40	26.7%
	₹2001 - ₹5000	70	46.7%
	₹5001 से अधिक	40	26.6%

प्राथमिक आंकड़े

सांख्यिकीय विश्लेषण

1. लिंग और आयु वर्ग का वितरण:

सर्वेक्षण में कुल 150 प्रतिभागियों में 60% पुरुष और 40% महिलाएं शामिल थीं, जो यह दर्शाता है कि डेयरी उद्योग में पुरुषों की भागीदारी महिलाओं की तुलना में अधिक है, लेकिन महिलाओं की उपस्थिति भी महत्वपूर्ण है। आयु वर्ग के अनुसार, अधिकतर (50%) प्रतिभागी 31-50 वर्ष की आयु के थे, जो कि कार्यशील और उत्पादनशील श्रेणी मानी जाती है।

2. शिक्षा स्तर:

प्रतिभागियों की शिक्षा स्थिति में लगभग 70% ने प्राथमिक या उससे अधिक शिक्षा प्राप्त की है, जो डेयरी प्रबंधन और नए तकनीकी ज्ञान के ग्रहण करने में सहायक हो सकती है।

3. वार्षिक पारिवारिक आय:

53.3% परिवारों की वार्षिक आय ₹50,001 से ₹1,50,000 के बीच है, जो बताता है कि डेयरी उद्योग छोटे और सीमांत किसान परिवारों के लिए आय का एक मुख्य स्रोत है। ₹1,50,001 से अधिक आय वाले परिवार केवल 23.3% हैं, जो आर्थिक स्थिति में असमानता

को दर्शाता है।

4. डेयरी पशुओं की संख्या और उत्पादन:

43.3% परिवारों के पास 1-2 पशु हैं, जबकि 40% के पास 3-5 पशु हैं। दैनिक दुग्ध उत्पादन का आंकड़ा यह बताता है कि 46.7% परिवारों का उत्पादन 0-5 लीटर प्रति दिन है, जो सीमित उत्पादन क्षमता दर्शाता है। केवल 16.6% परिवार 11 लीटर से अधिक उत्पादन करते हैं।

5. महिलाओं की भागीदारी:

महिलाओं की 63.3% सक्रिय भागीदारी डेयरी कार्यों में देखी गई, जो सामाजिक सशक्तीकरण का सकारात्मक संकेत है। 10% महिलाएं इस क्षेत्र में निष्क्रिय हैं, जिन्हें प्रशिक्षण और प्रोत्साहन की आवश्यकता है।

6. मासिक औसत आय:

डेयरी से 46.7% परिवार ₹2001 से ₹5000 तक मासिक आय प्राप्त कर रहे हैं, जो ग्रामीण परिवारों के लिए महत्वपूर्ण सहायक आमदनी है।

शोध निष्कर्ष

सोनभद्र जनपद में किए गए क्षेत्रीय अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष सामने आए हैं कि डेयरी उद्योग का सामाजिक और आर्थिक दोनों ही क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रभाव है। सबसे पहले, यह पाया गया कि डेयरी उद्योग ग्रामीण परिवारों की आय में वृद्धि का एक प्रमुख स्रोत है। अधिकांश परिवारों की वार्षिक आय में डेयरी से प्राप्त आय की हिस्सेदारी लगभग 40-50% तक पाई गई, जो कृषि से होने वाली अस्थिर आय को स्थिरता प्रदान करती है।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि डेयरी उद्योग में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी सामाजिक स्तर पर उनके सशक्तीकरण में सहायक है। महिलाओं की भागीदारी से परिवारों में निर्णय लेने की प्रक्रिया में उनकी भूमिका बढ़ी है, जिससे पारिवारिक आर्थिक व्यवस्था और सामाजिक सम्मान दोनों में सुधार हुआ है। महिला स्वयं सहायता समूहों और सहकारी समितियों की उपस्थिति ने महिलाओं को न केवल आय अर्जित करने का अवसर दिया, बल्कि उन्हें नेतृत्व और आत्मनिर्भर बनने का मंच भी प्रदान किया।

पशुओं की संख्या और उनकी उत्पादकता के संदर्भ में पाया गया कि सीमित संसाधनों के बावजूद अधिकांश परिवार 1 से 5 पशुओं का पालन करते हैं, जिसके कारण दुग्ध उत्पादन सीमित है। इसके परिणामस्वरूप, अधिकांश परिवारों की मासिक आय मध्यम स्तर की है। इस स्थिति को सुधारने के लिए पशुपालन तकनीकों, पोषण प्रबंधन, और बेहतर चिकित्सा सेवाओं को अपनाना आवश्यक है।

डेयरी उद्योग की मुख्य समस्याएँ:

सोनभद्र जनपद में डेयरी उद्योग ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने की क्षमता रखता है, परंतु इसके विकास में कई संरचनात्मक और व्यवहारिक बाधाएँ सामने आती हैं। सबसे बड़ी चुनौती गुणवत्तापूर्ण पशु चारे की कमी है, क्योंकि जिले के कई क्षेत्रों में कृषि योग्य भूमि कम और वनों का विस्तार अधिक होने के कारण पशुओं के लिए नियमित हरे चारे की उपलब्धता सीमित रहती है। चारे की इस कमी से दूध उत्पादन सीधे प्रभावित होता है।

दूसरी प्रमुख समस्या आधुनिक डेयरी तकनीकों का अभाव है। अधिकांश डेयरी किसान पारंपरिक तरीकों पर निर्भर हैं, जिससे उत्पादकता कम और उत्पादन लागत अधिक हो जाती है। मशीन मिल्टिंग, ठंडा संरक्षण, और वैज्ञानिक पशुपालन की सुविधाओं का पर्याप्त प्रसार नहीं हो पाया है। इसके परिणामस्वरूप दूध की गुणवत्ता नियंत्रण और विपणन क्षमता दोनों कमजोर बनी रहती हैं।

इसके अतिरिक्त, पशु स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता भी एक महत्वपूर्ण चुनौती है। सोनभद्र के दूरस्थ और पहाड़ी क्षेत्रों में पशु चिकित्सक, टीकाकरण कार्यक्रम और स्वास्थ्य परामर्श सीमित रूप से उपलब्ध हैं। समय पर उपचार न मिल पाने से पशु रोगों का प्रसार बढ़ता है और उत्पादकता में गिरावट आती है।

समाधान एवं चर्चा:

इस अध्ययन के निष्कर्षों के आलोक में सोनभद्र जनपद में डेयरी उद्योग को और अधिक प्रभावशाली एवं समावेशी बनाने हेतु निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जाते हैं:

1. प्रशिक्षण एवं तकनीकी साक्षरता का विस्तार:

ग्रामीण डेयरी पालकों को आधुनिक पशुपालन तकनीकों, टीकाकरण, चारे की वैज्ञानिक व्यवस्था एवं दुग्ध गुणवत्ता सुधार की विधियों पर प्रशिक्षण देना आवश्यक है। इसके लिए कृषि विज्ञान केंद्र (KVK) और डेयरी सहकारी समितियों को सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।

2. पशु स्वास्थ्य सेवाओं का सुदृढ़ीकरण:

पशुओं की कम उत्पादकता का प्रमुख कारण समय पर स्वास्थ्य सेवाओं की अनुपलब्धता है। ग्राम स्तर पर मोबाइल पशु चिकित्सा इकाइयों की स्थापना और नियमित स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन किया जाना चाहिए।

3. दूध संग्रहण और विपणन संरचना का विकास:

स्थानीय स्तर पर दुग्ध शीतक (milk chiller) केन्द्रों और सहकारी बिक्री केन्द्रों

की स्थापना से किसानों को उचित मूल्य और बाजार तक सीधी पहुँच मिल सकती है। इससे बिचौलियों की निर्भरता भी घटेगी।

4. महिला सहभागिता को संस्थागत रूप देना:

महिलाओं के लिए अलग से डेयरी सहकारी समितियाँ और स्वयं सहायता समूह बनाकर उन्हें नेतृत्व, ऋण सुविधा और विपणन में विशेष प्रशिक्षण दिया जाए, ताकि उनकी भूमिका और प्रभावशील हो।

5. ऋण एवं बीमा की सुलभ व्यवस्था:

डेयरी पशुओं की खरीद, शेड निर्माण, चारा भंडारण आदि के लिए सस्ती ब्याज दर पर ऋण की व्यवस्था हो। साथ ही पशु बीमा को सरल और सुगम बनाकर जोखिम को कम किया जाए।

6. सरकारी योजनाओं की प्रभावी पहुँच:

"राष्ट्रीय गोकुल मिशन", "डेयरी उद्यमिता विकास योजना" एवं "एकीकृत डेयरी विकास कार्यक्रम" जैसी योजनाओं की जानकारी और लाभ अधिकतम डेयरी पालकों तक पहुँचाने के लिए पंचायत स्तर पर विशेष शिविर आयोजित किए जाएं।

7. सामुदायिक भागीदारी और नवाचार:

सामूहिक प्रयासों जैसे डेयरी किसान उत्पादक संगठन (FPO) की स्थापना ग्रामीण स्तर पर नवाचार और बाजार में प्रतिस्पर्धा के लिए लाभकारी सिद्ध हो सकती है।

संदर्भ सूची:

1. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद. (2022). स्वयं सहायता समूह के माध्यम से डेयरी उद्यम में महिलाओं को समर्थ बनाना. <https://icar.org.in/hi/savayan-sahaayataa-samaauha-kae-maadhayama-sae-daeyarai-udayama-maen-mahailaaon-kao-samaratha> ICAR
2. सोधी, र. एस. (2024, 30 सितंबर). कृषि आय बढ़ाने और महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण में डेयरी सेक्टर की भूमिका. *रूरल वॉइस*. <https://www.ruralvoice.in/opinion/the-potential-of-the-dairy-sector-for-better-farming-income-and-economic-empowerment-of-women.html> RuralVoice
3. कुमारी, ख. (2024). भारत में डेयरी उद्योग की स्थिति और इसका भविष्य. *अंतर्राष्ट्रीय वित्त, प्रबंधन और अर्थशास्त्र पत्रिका*, 7(1), 396–399. <https://doi.org/10.33545/26179210.2024.v7.i1.321> theeconomicsjournal.com
4. ठाकुर, द. (2025, 27 अप्रैल). भारतीय डेयरी पशुओं की कम उत्पादकता: चुनौतियाँ और शमन की रणनीतियाँ. *पशुधन प्रहरी*. <https://www.pashudhanpraharee.com/low-productivity-of-indian-dairy-animals-challenges-mitigation-strategies-25/> Pashudhan

Prahree+1Pashudhan Prahree+1

5. Tomar, D. S. (2023). “वैज्ञानिक डेयरी पशु आहार व प्रजनन प्रथाओं को अपनाने पर सामाजिक-आर्थिक प्रभाव: मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश) का एक मामला” Extension Journal. (2024). उत्तर प्रदेश के डेयरी किसानों की स्थिति और आवश्यकताएँ: एक मूल्यांकन अध्ययन
6. Felis, A. (2025). डेयरी विकास और सामाजिक-आर्थिक रूपांतरण: देशानुक्रमीय विश्लेषण (लेखक/संस्थान) (2025). डेयरी पालन का सामाजिक-आर्थिक विकास व ग्रामीण सशक्तिकरण पर प्रभाव: आंनकापल्ली (आंध्र प्रदेश) का अध्ययन
7. NABARD (प्रादेशिक योजना दस्तावेज़). (2016–17). सोनभद्र क्षेत्र विकास योजना — डेयरी खण्ड (संक्षिप्त क्षेत्रीय योजना व विश्लेषण)

Disclaimer/Publisher’s Note:

The statements, opinions and data contained in all publications are solely those of the individual author(s) and contributor(s) and not of JNGBU and/or the editor(s). JNGBU and/or the editor(s) disclaim responsibility for any injury to people or property resulting from any ideas, methods, instructions or products referred to in the content.